स्नातक प्रथम खंड, हिन्दी प्रतिष्ठा

उपन्यास के तत्व का शेषांश

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

(iii) कथोपकथन या संवाद

यह उपन्यास का तीसरा प्रधान तत्व है। जब पात्र आपस में संवाद करते हैं तब उपन्यास को गति मिलती है। आरंभिक काल के उपन्यास तथा कथाओं में संवाद का अभाव होता था। या फिर हमारी कथाओं में जिसमें राजा या ब्राह्मण या ठाकुर इत्यादि की कथा होती थी, में वक्ता ही सम्बद्ध पात्रों की ओर से बोलता था और वही उत्तर भी दे देता था। सच पूछा जाए तो यह स्थिति बड़ी अस्वाभाविक होती थी। इससे न केवल कथाप्रवाह में बाधा आती थी वरन् चरित्र चित्रण का भी अभाव होता था। यह अत्यंत आवश्यक है कि जब एक स्थल पर अनेक पात्र उपस्थित हों तो आपस में संवाद करें। एक

[illegible] ऐसे ही यह [illegible] आरंभ

पुस्तक का दूसरा पात्र उभर दे। [illegible]

होती है संवाद का प्रारम्भ होता है। यह संवाद ही है जो [illegible] विश्वसनीयता का भाव पैदा करता

उपन्यास में सहजता और [illegible] आदमी मौन है तब तक [illegible]

है। [illegible] कहता है न कि जब तक [illegible] का पता नहीं हो सकता। किन्तु उसके बोलने

[illegible] की [illegible] विशेषताएं सामने आ जाती हैं के साथ ही उसकी आन्तरिक विशेषताएं [illegible]

[illegible]

पात्र की सूक्ष्मता, [illegible], और [illegible]

[illegible] उसके [illegible] उसकी चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित करती है। [illegible] उपन्यास का मूल उद्देश्य होता है [illegible] चरित्र पर प्रकाश डालने का [illegible]

सहज उपकरण है तो वह है उसका संवाद। संवाद की दूसरी उपयोगिता है कथानक का विकास। संवाद कथा की [illegible] करने का काम करता है। तात्पर्य उपन्यास के कथानक को आगे [illegible] में संवाद का महत्वपूर्ण योग दान होता है। इससे [illegible] संवाद या कथोपकथन उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है जिसके अभाव में उपन्यास [illegible] एवं अरोचक होकर रह जाएगा उसे [illegible] के रूप में ही स्वीकारा जाएगा उपन्यास के रूप में नहीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि कथोपकथन उपन्यास के पात्रों में सजीवता लाता है, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालता है तथा कथानक को गति प्रदान करता है एवं उसे आगे [illegible] करता है। अतः कथानक उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व इसमें संशय नहीं है।